(1)

Dr Tapali Mukerjee.
Associate Professor
(Music)
Date 01-06-2020
Rohtas Mahila College
Sasaram.

Study Material For B.A Part III (Hons)
Paper 5th

① Topic: (A) Gram Rag Classification
(B) Mel Rag Classification.

(A) ग्राम राग वर्गीकरण — जाति वर्गीकरण के बाद ग्राम राग वर्गीकरण की उत्पत्ति हुई। सर्वप्रथम मतंग मुनि द्वारा रचित "बृहद्देशी" नामक ग्रन्थ में "ग्राम-राग" शब्द प्रयोग किया गया। प्राचीन काल में ग्राम-राग भी जाति गायन तथा राग गायन के अनुरूप सुन्दर तथा गाने वाली रचनाएँ होती थी। प्राचीन ग्रन्थों में 30 ग्राम राग पाया जाता है अर्थात 18 जातियों से 30 ग्राम राग की उत्पत्ति माना गया है। कहा जाता है कि तीन ग्राम में से गान्धार ग्राम गान्धर्व लोगों के लोक-लोक विलुप्त हो गया है, अतः षड्ज एवं मध्यम ग्रामों की मूर्छना से जाति तथा जाति से ग्राम राग की उत्पत्ति माना गया है। यह ग्राम रागों को पाँच गीतियों में विभाजित किया गया है जो इस प्रकार है — शुद्ध, भिन्न, गौड़, बेसर तथा साधारण।

शुद्ध से सात, भिन्न से पाँच, गौड़ से तीन, बेसर से आठ तथा साधारण गीति से सात ग्राम राग माना गया था। जो कि वर्तमान समय में राग गायन में विकसित हो गया है।

(B) मेल राग वर्गीकरण — मध्यकालीन राग-रागिनियों के वर्गीकरण को अवैज्ञानिक वर्णित करते हुए संगीत

विद्वानों ने मेल-राग वर्गीकरण या थाट-राग वर्गीकरण (2)
को अपनाएँ। दक्षिण भारतीय संगीत में जिसे
मेल कहा गया है उसे उत्तर भारतीय संगीत प्रणाली में
थाट कहा गया है। अतः मेल को आधुनिक थाट का
पर्यायवाची कहा जा सकता है।

वास्तव में मेल राग-वर्गीकरण प्राचीन मूर्च्छना
पद्धति का परिवर्तित स्वरूप है। कहा जाता है मेल
"मूर्च्छना क्रमयुक्ता सप्त स्वराः" अतः सात स्वरों के
क्रमानुसार प्रयोग ही मूर्च्छना है। जिससे जातियाँ
उत्पत्ति होती है उसी प्रकार मेल या थाट है।
"मेल स्वरसमूह स्यात रागव्यंजक शक्तिमान"
मेल या थाट सात स्वरों का वह समूह है जिससे
अनेक राग की उत्पत्ति होते है।

मेलों की संख्या के बारे संगीत विद्वानों
बीच बहुमत पाया जाता है, कोई बारह, तो
कोई उन्नीस तथा वेंकटमखी ने बहत्तर (72)
मेल को सिद्ध किये है। आधुनिक समय में भी
कर्नाटक पद्धति में "मेल" शब्द प्रचलित है।
जिस प्रकार उत्तर भारतीय संगीत में दस (10)
थाट माने जाते हैं उसी प्रकार कर्नाटक संगीत
में उन्नीस मेल माने जाते हैं।

पंडित लोचन के "राग तरंगिणी" नामक
ग्रन्थ में केवल (12) बारह मेल माने हैं।
इसी प्रकार "राग विबोध" में तेईस (23) तथा
"स्वर मेल कलानिधि" में सताईस (27) और
"चतुर्दण्डि प्रकाशिका" में उन्नीस मेल या थाट माना
गया है।